Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVI, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

मध्यप्रदेश में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी पर एक अध्ययन: प्रवृत्तियाँ, प्रेरणाएँ और प्रभाव

कैलाश मेड़ा*

* शोधार्थी (राजनीति विज्ञान) राजनीति विज्ञान एवं लोक प्रशासन अध्ययनशाला, विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) भारत

प्रस्तावना :

क. वैश्विक परिप्रेक्ष्य: युवाओं की राजनीति में भागीदारी एक महत्वपूर्ण विषय है, जिसका प्रभाव न केवल राष्ट्रीय स्तर पर बल्कि वैश्विक राजनीति पर भी पड़ता है। पूरे विश्व में, युवाओं का एक बड़ा वर्ग सामाजिक परिवर्तन, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता रहा है। युवा नागरिकों की राजनीतिक भागीदारी का इतिहास विभिन्न देशों में अलग-अलग रहा है, जैसे; अमेरिका और यूरोप में 1960 के दशक के सिविल राइट्स मूवमेंट्स और छात्र आंदोलनों ने राजनीतिक जागरूकता और सक्रियता को बढ़ावा दिया। ये आंदोलन राजनीति में युवाओं की आवाज़ को मजबूत बनाने में सहायक रहे। मध्य पूर्व में हाल के वर्षों में, 'अरब स्प्रिंग' (2011) के दौरान युवाओं की भागीदारी ने तानाशाही सरकारों को चुनौती दी, जो लोकतंत्र की दिशा में परिवर्तन का प्रतीक बनी। अफ्रीकी देशों में भी युवाओं ने सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर अपना प्रभाव डाला है, विशेष रूप से शिक्षा, बेरोजगारी, और शासन के मुद्दों पर आंदोलन करके।

ख. भारतीय परिप्रेक्ष्य: भारत में, युवाओं की राजनीति में भागीदारी का एक लंबा इतिहास है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान युवा नेताओं जैसे भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, और कई अन्य ने बड़ी भूमिका निभाई। इसके बाद स्वतंत्र भारत में युवाओं ने राजनीति में अपनी सक्रियता बनाए रखी है। हाल के दशकों में, भारतीय राजनीति में युवाओं की भागीदारी को निम्नलिखित घटनाओं के माध्यम से देखा जा सकता है:

1. **1970 का दशक:** 'जयप्रकाश नारायण' के नेतृत्व में हुए छात्र आंदोलन (जिसे 'जेपी आंदोलन' के रूप में जाना जाता है) ने भारतीय राजनीति में युवाओं की शक्ति को प्रदर्शित किया। इस आंदोलन ने इंदिरा गांधी की सरकार के खिलाफ व्यापक जनांदोलन खड़ा किया, जिससे आपातकाल की घोषणा हुई।
2. **1990 का दशक और मंडल आयोग आंदोलन:** इस समय, आरक्षण के मुद्दे पर युवाओं का एक बड़ा वर्ग सड़कों पर उतरा। इससे युवाओं की राजनीतिक और सामाजिक चेतना में वृद्धि हुई।
3. **हाल के वर्ष:** आधुनिक भारत में, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म ने युवाओं के राजनीतिक सक्रियता को एक नई दिशा दी है। विशेष रूप से, 'निर्भया कांड' के बाद 2012 में दिल्ली में हुए विरोध प्रदर्शन, 'एंटी-सीएए' आंदोलन, और किसान आंदोलनों में युवाओं की सक्रिय भागीदारी ने दिखाया है कि आज का युवा राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों के प्रति कितना जागरूक है।

ग. वैश्विक और भारतीय दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषण: वैश्विक स्तर पर, युवा राजनीतिक आंदोलनों का हिस्सा बनकर सरकारों को चुनौती देते रहे हैं। भारत में भी युवा सामाजिक और राजनीतिक बदलाव के लिए एक प्रमुख ताकत बने हुए हैं। भारत में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी का विशेष पहलू उनकी जातिगत और धार्मिक पहचान से जुड़ा हुआ है, जबकि वैश्विक स्तर पर युवा आंदोलनों में अधिकतर मुद्दों जैसे जलवायु परिवर्तन, नस्लवाद, और मानवाधिकारों पर ध्यान केंद्रित किया गया है। हालाँकि, दोनों स्तरों पर यह समानता है कि युवाओं का बड़ा वर्ग सोशल मीडिया और इंटरनेट के माध्यम से अपने विचारों का प्रसार करता है और सरकार की नीतियों पर प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया देता है। युवाओं की राजनीति में भागीदारी, चाहे वैश्विक हो या भारतीय, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को जीवंत और सशक्त बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह भागीदारी सरकारों को जिम्मेदार बनाने के साथ-साथ सामाजिक न्याय और परिवर्तन के प्रति जन जागरूकता बढ़ाने का कार्य करती है। भारत में, जहाँ युवा जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा है, उनकी राजनीति में सक्रिय भागीदारी लोकतंत्र की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी: लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी एक मजबूत और स्थिर लोकतंत्र के निर्माण के लिए अत्यंत आवश्यक है। युवा समाज का सबसे ऊर्जावान और जागरूक वर्ग होता है, जिनके विचार और दृष्टिकोण समाज और राजनीति को नई दिशा देने की क्षमता रखते हैं। उनकी भागीदारी से न केवल शासन और नीति निर्माण की प्रक्रिया में विविधता आती है, बल्कि यह लोकतंत्र की जड़ों को और गहरा भी करती है।

लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी के कुछ प्रमुख पहलू:

1. **जनप्रतिनिधित्व:** युवाओं की राजनीतिक भागीदारी से शासन में उनके दृष्टिकोण का समावेश होता है। इससे यह सुनिश्चित होता है कि नीतियाँ युवा वर्ग की आवश्यकताओं और आकांक्षाओं को ध्यान में रखकर बनाई जाएँ।
2. **नई सोच और नवाचार:** युवा न केवल ऊर्जा का स्रोत होते हैं बल्कि वे नई सोच और नवाचार भी लाते हैं। उनकी भागीदारी से राजनीति में नई दृष्टि और प्रगतिशील नीतियों का विकास होता है।

3. **जवाबदेही और पारदर्शिता:** युवाओं की जागरूकता और सक्रियता से सरकारों को अधिक जवाबदेह और पारदर्शी बनाया जा सकता है। यह मीडिया और सोशल मीडिया के माध्यम से जनमत को प्रभावित करने की उनकी क्षमता के कारण संभव होता है।

4. **समाज में जागरूकता का प्रसार:** युवा वर्ग समाज में राजनीतिक और सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उनके आंदोलनों और अभियानों से समाज में व्यापक परिवर्तन की संभावनाएँ बढ़ती हैं।

महत्वपूर्ण तिथियाँ, घटनाएँ और आँकड़े:

1. **1960 का दशक** – अमेरिका और यूरोप में सिविल राइट्स मूवमेंट्स में युवाओं ने व्यापक भागीदारी की, जिसने वैश्विक राजनीति को प्रभावित किया। इन आंदोलनों ने लोकतांत्रिक अधिकारों के प्रति लोगों की जागरूकता बढ़ाई।
2. **1974 – 1977** – भारत में 'जेपी आंदोलन' (जयप्रकाश नारायण आंदोलन) के दौरान छात्रों और युवाओं ने इंदिरा गांधी की सरकार के खिलाफ आंदोलन किया। यह आपातकाल (1975–1977) के दौरान भारत में लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए सबसे बड़े आंदोलनों में से एक था। इसमें युवाओं की सक्रिय भागीदारी ने भारतीय राजनीति पर गहरा प्रभाव डाला।
3. **1989 – चीन** में 'थियानमेन स्क्वायर प्रोटेस्ट' के दौरान छात्रों और युवाओं ने लोकतांत्रिक सुधारों की मांग की। इस आंदोलन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकतंत्र और मानवाधिकारों की चर्चाओं को गति दी।
4. **2011 – अरब स्प्रिंग** – मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में युवाओं की भागीदारी से उत्पन्न जनआंदोलनों ने तानाशाही सरकारों को चुनौती दी। यह घटनाएँ कई देशों में लोकतंत्र की स्थापना के लिए प्रेरणास्रोत बनीं।
5. **2012 – निर्भया आंदोलन**, भारत – दिल्ली में **'निर्भया कांड'** के बाद देशभर में हुए विरोध प्रदर्शन में युवाओं की बड़ी भागीदारी देखी गई। इस घटना ने भारत में नारी सुरक्षा और अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाई और कानूनी सुधारों को प्रेरित किया।
6. **2018 – मार्च फॉर अवर लाइव्स, अमेरिका** – अमेरिका में युवाओं ने बंदूक हिंसा के खिलाफ बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन किया। यह घटना युवाओं की राजनीतिक सक्रियता का एक उदाहरण है जो लोकतांत्रिक बदलाव की दिशा में काम कर रहा है।
7. **2020 – एंटी-उअअ (नागरिकता संशोधान अधिनियम) आंदोलन भारत** – इस विरोध प्रदर्शन में भारत के विभिन्न हिस्सों में युवाओं ने प्रमुख भूमिका निभाई। यह आंदोलन नागरिकता और धर्मनिरपेक्षता जैसे संवैधानिक मुद्दों पर युवाओं की जागरूकता को दर्शाता है।
8. **2023 के विधानसभा चुनाव** – चुनाव आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, 2023 के विधानसभा चुनावों में भारत के लगभग 50 प्रतिशत मतदाता 18–35 वर्ष की आयु के थे। युवाओं की यह बड़ी जनसंख्या लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाती है।

युवाओं की राजनीतिक सहभागिता:

भारत की जनसंख्या में युवाओं का प्रतिशत: भारत की जनसंख्या का लगभग 65 प्रतिशत हिस्सा 35 वर्ष से कम आयु का है, और इसमें से 27 प्रतिशत युवा (18–35 वर्ष) की श्रेणी में आते हैं। यह जनसंख्या भारत के राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करने में सक्षम है। लोकसभा चुनाव 2019 में लगभग 84 मिलियन नए मतदाताओं ने पहली बार मतदान किया था, जिनमें से एक बड़ा हिस्सा युवा थे। यह युवाओं की लोकतांत्रिक भागीदारी के महत्व को रेखांकित करता है।

यूनाइटेड नेशन्स (संयुक्त राष्ट्र) की 'युवाओं का नागरिक और राजनीतिक अधिकारों में योगदान' रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया भर में युवाओं की भागीदारी से नीतिगत परिवर्तन और सामाजिक सुधार के अवसर बढ़े हैं। युवाओं की राजनीतिक भागीदारी लोकतंत्र की मजबूती के लिए अनिवार्य है। वे न केवल सरकार की जवाबदेही बढ़ाते हैं बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन की पहल भी करते हैं। उनकी सक्रियता से लोकतांत्रिक प्रक्रिया अधिक जीवंत, पारदर्शी, और जनहितकारी बनती है। भारत जैसे देश में, जहाँ युवाओं की संख्या अधिक है, उनकी भागीदारी से लोकतंत्र को एक नई दिशा मिल सकती है और नीतियों में उनकी आवाज़ को प्राथमिकता दी जा सकती है।

एनडीए ने हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश और गुजरात में 58 से 61 प्रतिशत तक का युवा समर्थन हासिल किया, जबकि आंध्रा प्रदेश और कर्नाटक में युवा वोट में बढ़ोतरी हुई। 'इंडिया' गठबंधन को हरियाणा, केरल, दिल्ली, राजस्थान, और झारखंड में युवा वोट शेयर में उल्लेखनीय वृद्धि मिली। देश में 210 मिलियन युवा मतदाता इस चुनाव के लिए तैयार थे, जो भारत के कुल मतदाताओं का 22 प्रतिशत हैं। 18 से 25 वर्ष के युवाओं का मतदान प्रतिशत 2014 के बाद से बढ़ा है, 2009 में 54 प्रतिशत से 2019 में 67 प्रतिशत तक पहुँचा। 2019 में 63 मिलियन युवा मतदाताओं ने भाजपा का समर्थन किया था, जिससे पार्टी को बढ़त मिली।

मध्यप्रदेश में राजनीतिक प्रवृत्तियों का अवलोकन: मध्यप्रदेश में राजनीतिक प्रवृत्तियों का अवलोकन विभिन्न ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों के गहन विश्लेषण पर आधारित है, जो राज्य के राजनीतिक परिदृश्य को आकार देते हैं। यहां मध्यप्रदेश की राजनीतिक प्रवृत्तियों का विस्तृत अवलोकन प्रस्तुत है:

ऐतिहासिक संदर्भ:

क. गठन: मध्यप्रदेश का गठन 1 नवंबर 1956 को विभिन्न रियासतों और क्षेत्रों के विलय के माध्यम से हुआ, जिसने इसके विविध राजनीतिक स्वरूप को प्रभावित किया।

ख. राजनीतिक विरासत: प्रारंभ में कांग्रेस पार्टी ने राजनीतिक परिदृश्य पर वर्चस्व बनाए रखा, लेकिन 1990 के दशक में भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के उभरने के बाद से यह राज्य की प्रमुख पार्टी बन गई।

ग. विभाजन: 2000 में छत्तीसगढ़ के अलग होने के बाद, राजनीतिक समीकरणों में बदलाव आया और शेष मध्यप्रदेश की विकास आवश्यकताओं पर अधिक ध्यान केंद्रित हुआ।

प्रमुख राजनीतिक दल:

क. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस: ऐतिहासिक रूप से मध्यप्रदेश की राजनीति में एक प्रमुख शक्ति, जिसमें दिग्विजय सिंह और कमलनाथ जैसे नेताओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

ख. भारतीय जनता पार्टी: पिछले दो दशकों से राज्य की राजनीति में वर्चस्व, जिसमें शिवराज सिंह चौहान जैसे नेता शामिल हैं, जिन्होंने कई बार मुख्यमंत्री के रूप में कार्य किया। वर्तमान में मध्यप्रदेश के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भी पूर्व में दो बार के विधायक, फिर तीसरी बारी में वे केन्द्र की पंसद, पार्टी की सहमती से व युवा नेतृत्वकर्ता के रूप में मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री बन प्रदेश की कमान संभाल रहे है।

ग. क्षेत्रीय दल: यद्यपि राष्ट्रीय दलों की तुलना में प्रभाव कम है, लेकिन

गोंडवाना गणतंत्र पार्टी और समाजवादी पार्टी जैसे क्षेत्रीय दलों की कुछ आदिवासी और ग्रामीण क्षेत्रों में उपस्थिति है।

शोध समस्या का कथन: वर्तमान राजनीतिक परिदृश्य में, लोगों की राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करने वाले कारकों का गहन विश्लेषण आवश्यक हो गया है। विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, और तकनीकी परिवर्तनों के कारण लोगों के राजनीतिक दृष्टिकोण और भागीदारी में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। विशेष रूप से मध्यप्रदेश जैसे राज्य में, जहां ग्रामीण और शहरी समाज के बीच स्पष्ट अंतर देखने को मिलता है, राजनीतिक भागीदारी की प्रकृति जटिल है। प्रस्तुत शोध में, शिक्षा, सोशल मीडिया का प्रभाव, और सामाजिक-आर्थिक स्थिति जैसे कारकों का अध्ययन करना आवश्यक है, क्योंकि ये कारक न केवल लोगों के मतदान व्यवहार को प्रभावित करते हैं, बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में उनकी भागीदारी के स्तर को भी निर्धारित करते हैं। यह अध्ययन इस प्रश्न का उत्तर खोजने का प्रयास करेगा कि ये विभिन्न कारक किस प्रकार और किस सीमा तक मध्यप्रदेश में लोगों की राजनीतिक भागीदारी को प्रभावित करते हैं।

शोध के उद्देश्य:

1. मध्यप्रदेश के युवाओं की राजनीतिक भागीदारी के स्तर का विश्लेषण करना।
2. युवाओं की भागीदारी को प्रभावित करने वाले कारकों की खोज करना।
3. राजनीतिक भागीदारी के शासन और नीतियों पर प्रभाव का आकलन करना।

शोध के प्रश्न:

1. शिक्षा का स्तर किस हद तक मध्यप्रदेश में लोगों की राजनीतिक भागीदारी और मतदान व्यवहार को प्रभावित करता है?
2. सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्म किस प्रकार मध्यप्रदेश के युवाओं की राजनीतिक जागरूकता और भागीदारी पर प्रभाव डालते हैं?
3. सामाजिक-आर्थिक स्थिति (आय स्तर, रोजगार, और आर्थिक सुरक्षा) का मध्यप्रदेश के शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में राजनीतिक भागीदारी के स्तर पर क्या प्रभाव है?
4. क्या शिक्षा, सोशल मीडिया, और सामाजिक-आर्थिक स्थिति के बीच कोई पारस्परिक संबंध है जो मध्यप्रदेश में लोगों की राजनीतिक भागीदारी को निर्धारित करता है? यदि हां, तो इन संबंधों की प्रकृति क्या है?

शोध प्रविधि: प्रस्तुत अध्ययन रतलाम जिले के 05 ब्लॉकों में प्रत्येक में से 10-10 उत्तरदाताओं व 18-35 वर्ष की आयु वर्ग के कुल 50 उत्तरदाताओं का चयन किया गया है। उत्तरदाताओं का चयन विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों विद्यार्थी, वकील, शासकीय कर्मचारी, व्यवसायी, पत्रकार, समाजिक कार्यकर्ता व राजनेताओं को सम्मलित किया गया है, ताकि उनके दृष्टिकोण और अनुभवों का विश्लेषण किया जा सके। प्रस्तुत अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान रूपरेखा का उपयोग किया गया है। वर्णनात्मक डिज़ाइन का चयन इसलिए किया गया है क्योंकि यह उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण, विचारों, और अनुभवों का विस्तृत विश्लेषण करने में सहायक होता है। तथ्यों के संग्रह के लिए संरचित प्रश्नावली का उपयोग किया गया, जिसमें खुले और बंद प्रश्न शामिल किये गयें। प्रश्नावली को व्यक्तिगत साक्षात्कार और ऑनलाइन फॉर्म के माध्यम से वितरित किया गया। संकलित तथ्यों का विश्लेषण सांख्यिकीय प्रक्रिया मुख्यत: 'प्रतिशत' के आधार पर वर्गीकरण व उसका स्पष्टीकरण करके, करने का प्रयास किया गया है।

तथ्यों का विश्लेषण:

तालिका क्रमांक 1: 18 से 35 वर्ष के उत्तरदाताओं का वर्गीकरण

क्र.	उत्तरदाताओं का व्यवसाय	आवृति	प्रतिशत
1	छात्र	20	40
2	सरकारी कर्मचारी	08	16
3	व्यवसायी	07	14
4	राजनेता	05	10
5	वकील	03	06
6	सामाजिक कार्यकर्ता	04	08
7	पत्रकार	03	06
	कुल	50	100 प्रतिशत

प्राथमिक स्त्रोत: शोध अध्ययन सर्वे

उपरोक्त तालिका अनुसार कुल 50 में से 20 उत्तरदाता छात्र थे, जो कि 40 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये प्रतिवेदक विभिन्न शैक्षिक संस्थानों में अध्ययनरत हैं और युवा राजनीति में विशेष रुचि रखते हैं। 8 प्रतिवेदक सरकारी क्षेत्र में कार्यरत थे, जो कुल सैंपल का 16 प्रतिशत हिस्सा बनाते हैं। ये प्रतिवेदक सरकार की नीतियों और प्रशासनिक प्रक्रियाओं से भली-भांति परिचित हैं और उनकी राजनीतिक भागीदारी प्रशासनिक दृष्टिकोण पर आधारित है। 7 उत्तरदाता व्यवसायी थे, जो 14 प्रतिशत का हिस्सा बनाते हैं। ये प्रतिवेदक आर्थिक नीति, व्यापारिक मुद्दों, और सरकारी नीतियों के प्रभाव से संबंधित राजनीतिक गतिविधियों में शामिल रहते हैं। 5 उत्तरदाता सक्रिय राजनेता थे, जो कुल सैंपल का 10 प्रतिशत हिस्सा हैं। ये प्रतिवेदक विभिन्न राजनीतिक दलों या संगठनों से जुड़े थे और राजनीति में उनकी सक्रिय भागीदारी सबसे अधिक थी। 3 वकील थे, जो कि 6 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। वकील राजनीतिक और कानूनी दृष्टिकोण से राजनीति में भाग लेते हैं, और कानून से संबंधित मुद्दों पर विशेष रुचि रखते हैं। 4 सामाजिक कार्यकर्ता थे, जो कुल 8 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये प्रतिवेदक समाज सुधार, न्याय, और मानवाधिकारों से संबंधित मुद्दों पर राजनीति में सक्रिय थे। 3 पत्रकार थे, जो 6 प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करते हैं। ये पत्रकार राजनीति और समाज से संबंधित खबरों और विचारों को जनता तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और राजनीतिक परिदृश्य का गहन अध्ययन करते हैं। कुल 50 उत्तरदाताओं का साक्षात्कार लिया गया, जिनमें से प्रत्येक का किसी न किसी रूप में राजनीति के साथ सीधा या परोक्ष संबंध था। इस समूह में युवा विभिन्न पृष्ठभूमियों से आते हैं और उनकी राजनीतिक भागीदारी उनके पेशे, शिक्षा, और सामाजिक स्थिति पर निर्भर करती है।

तालिका क्रमांक 2: शिक्षा के आधार पर राजनीतिक भागीदारी

क्र.	उत्तरदाताओं का शिक्षा स्तर	प्रतिशत	
		मतदान करने वाले युवाओं की आवृति (प्रतिशत)	राजनीतिक चर्चाओं में सक्रियता की आवृति (प्रतिशत)
1	स्नातक से अधिक	15 (30)	14 (28)
2	स्नातक	12 (24)	20 (40)
3	उच्च माध्यमिक	13 (26)	13 (26)
4	माध्यमिक	10 (20)	13 (26)
	कुल	50 (100 प्रतिशत)	

प्राथमिक स्त्रोत: शोध अध्ययन सर्वे

तालिका क्रमांक 2 के अनुसार स्नातक से अधिक शिक्षा वाले में 30 प्रतिशत ने मतदान किया और 28 प्रतिशत ने राजनीतिक चर्चाओं में सक्रियता दिखाई। यह दर्शाता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त युवा राजनीति में अधिक रुचि रखते हैं। वहीं स्नातक स्तर के उत्तरदाताओं में 24 प्रतिशत ने मतदान किया और 40 प्रतिशत राजनीतिक चर्चाओं में भाग लेते हैं। स्नातक युवा भी राजनीतिक भागीदारी में सक्रिय रहते हैं। वहीं उच्च माध्यमिक के उत्तरदाताओं में 26 प्रतिशत ने मतदान किया और 26 प्रतिशत ही राजनीतिक चर्चाओं में सक्रिय थे, जो दर्शाता है कि शिक्षा के स्तर में कमी के समान सक्रियता रहती है। माध्यमिक स्तर के उत्तरदाताओं में 20 प्रतिशत ने मतदान किया और 26 प्रतिशत राजनीतिक चर्चाओं में शामिल थे, जो राजनीतिक भागीदारी में सबसे कम है।

तालिका क्रमांक 3: सोशल मीडिया का प्रभाव

क्र.	सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म	प्रतिशत	
		उपयोग करने वाले युवाओं की आवृति (प्रतिशत)	राजनीतिक चर्चाओं में सक्रियता की आवृति (प्रतिशत)
1	फेसबुक	13 (26)	16 (32)
2	ट्विटर	09 (18)	05 (10)
3	इंस्टाग्राम	13 (26)	12 (24)
4	व्हाट्सएप	15 (30)	17 (34)
	कुल	50 (100 प्रतिशत)	

प्राथमिक स्त्रोत: शोध अध्ययन सर्वे

तालिका क्रमांक 3 के अनुसार सबसे अधिक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के रूप में व्हाट्सएप का उपयोग 30 प्रतिशत युवा करते हैं वहीं सबसे ज्यादा 34 प्रतिशत उत्तरदाता राजनीतिक चर्चाओं में सक्रिय हैं। यह सबसे अधिक उपयोग किया जाने वाला प्लेटफॉर्म है। फेसबुक का उपयोग 26 प्रतिशत युवा करते हैं, और इनमें से 32 प्रतिशत युवा राजनीति से संबंधित चर्चाओं में भाग लेते हैं। इंस्टाग्राम का उपयोग 26 प्रतिशत युवा करते हैं, लेकिन केवल 24 प्रतिशत ही राजनीति में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। यह दर्शाता है कि इंस्टाग्राम पर सामाजिक मुद्दों की चर्चा व्हाट्सएप की अपेक्षा कम है। ट्विटर का उपयोग 18 प्रतिशत युवा करते हैं, जिनमें से मात्र 10 प्रतिशत उत्तरदाता ही राजनीतिक चर्चाओं में सक्रिय रहते हैं, जो कि सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म में सबसे कम व सीमित उपयोग किया जाने वाला व राजनीतिक सक्रिय चर्चाओं वाला माध्यम हैं।

तालिका क्रमांक 4: सामाजिक-आर्थिक स्थिति के आधार पर राजनीतिक भागीदारी

क्र.	आर्थिक स्तर	प्रतिशत	
		मतदान दर कीआवृति (प्रतिशत)	राजनीतिकगतिविधियों में भागीदारी की आवृति (प्रतिशत)
1	उच्च आय वर्ग	05 (10)	09 (18)
2	मध्यम आय वर्ग	25 (50)	27 (54)
3	निम्न आय वर्ग	20 (40)	14 (28)
	कुल	50 (100 प्रतिशत)	

प्राथमिक स्त्रोत: शोध अध्ययन सर्वे

उच्च आय वर्ग के उत्तरदाताओं में से 10 प्रतिशत ने मतदान किया और वहीं 18 प्रतिशत ही राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं। यह समूह राजनीतिक जागरूकता में सबसे कम है। मध्यम आय वर्ग के संबसे अधिक 50 प्रतिशत ने मतदान किया और 54 प्रतिशत राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेते हैं, जो संतुलित व अधिक राजनीतिक भागीदारी को दर्शाता है। निम्न आय वर्ग के उत्तरदाताओं में मतदान दर 40 प्रतिशत है और 28 प्रतिशत राजनीतिक गतिविधियों में शामिल होते हैं, जो दर्शाता है कि निम्न आय वर्ग के आर्थिक स्तर के समूह भी देश व स्थानीय स्तर की राजनीतिक गतिविधियों में बेहतर भागीदारी व अहम भूमिका निभाती है।

उपर्युक्त तालिकाओं से स्पष्ट होता है कि मध्यप्रदेश में युवाओं की राजनीतिक भागीदारी शिक्षा स्तर, सोशल मीडिया उपयोग, और आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती है। उच्च शिक्षा और मध्यम आय वाले युवा अधिक सक्रिय हैं, जबकि सोशल मीडिया ने राजनीतिक चर्चाओं के लिए एक महत्वपूर्ण मंच प्रदान किया है।

निष्कर्ष: रतलाम जिले के युवा, जो मध्यप्रदेश के सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य का हिस्सा हैं, उनकी राजनीतिक भागीदारी में बीते वर्षों में वृद्धि देखी गई है। अध्ययन से पता चलता है कि 18-35 वर्ष आयु वर्ग के युवा अब पहले की तुलना में अधिक सक्रिय रूप से चुनावों में हिस्सा लेते हैं, राजनीतिक मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करते हैं, और राजनीतिक दलों की गतिविधियों में भागीदारी करते हैं। हालांकि, इसमें शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच जागरूकता का अंतर स्पष्ट रूप से देखने को मिलता है। शहरी क्षेत्रों के युवा राजनीति के बारे में अधिक जानकारी रखते हैं और सोशल मीडिया का उपयोग करके अपने विचार साझा करते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के युवा पारंपरिक माध्यमों पर अधिक निर्भर रहते हैं। इसके अलावा, कई युवा यह महसूस करते हैं कि राजनीति में ईमानदारी और पारदर्शिता की कमी है, जिसके कारण उनमें निराशा का भाव भी है। लेकिन सरकार की योजनाओं और नीतियों में युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने से इस स्थिति में सुधार हो सकता है।

सुझाव:

1. **राजनीतिक शिक्षा कार्यक्रम:** युवाओं को राजनीति और लोकतंत्र की समझ विकसित करने के लिए शिक्षा संस्थानों में विशेष पाठ्यक्रम और कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए।
2. **डिजिटल प्लेटफार्म का उपयोग:** सोशल मीडिया और डिजिटल मंचों के माध्यम से युवाओं के बीच राजनीतिक मुद्दों पर संवाद को बढ़ावा दिया जाए।
3. **स्थानीय नेताओं का संवाद:** स्थानीय राजनीतिक नेताओं और युवाओं के बीच संवाद सत्र आयोजित किए जाएं, जिससे युवाओं को राजनीतिक प्रक्रियाओं में शामिल होने का मौका मिले।
4. **नागरिक जागरूकता अभियान:** ग्रामीण क्षेत्रों में नागरिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से युवाओं को उनके मतदान अधिकार और राजनीतिक भागीदारी के महत्व के बारे में जानकारी दी जाए।
5. **प्रोत्साहन योजनाएं:** सरकार को उन योजनाओं पर विचार करना चाहिए जो युवाओं की राजनीतिक भागीदारी को प्रोत्साहित करें, जैसे कि युवा संसद कार्यक्रम और राजनीतिक कार्यशालाएँ।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. https://www.youthinpolitics.in

2. भारत की जनगणना 2011, भारत सरकार
3. आलम, एम. एस., और अहमद, एच. (2017). स्थान, राजनीति और मतदान. एस. पल्शिकर, एस. कुमार, और एस. लोढ़ा (संपादक), भारत में चुनावी राजनीति: भारतीय जनता पार्टी का पुनरुत्थान में. रूटलेज.पृ. 115-117
4. एशवर्थ, एस. (2012). चुनावी उत्तरदायित्व: हालिया सैद्धांतिक और अनुभवजन्य कार्य. एनुअल रिव्यू ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 15, 183-185.
5. https://ceomadhyapradesh.nic.in
6. https://des.mp.gov.in/
7. मध्यप्रदेश सरकार जिला पोर्टल
8. मध्यप्रदेश सरकार का आधिकारिक पोर्टल - मध्यप्रदेश के सामाजिक-राजनीतिक नीतियों और योजनाओं के लिए।
9. https://mplocalelection.gov.in
10. https://ceomadhyapradesh.nic.in
11. नीति आयोग, भारत सरकार - देश के विकास योजनाओं और राज्यों में युवाओं की भागीदारी के संदर्भ में।
12. पीआरएस लेजिस्लेटिव रिसर्च - भारत में कानून और नीति निर्माण में युवाओं की भागीदारी से संबंधित शोधपत्र और रिपोर्ट।
13. https://mpvidhansabha.nic.in
14. इंडियन जर्नल ऑफ़ पॉलिटिकल साइंस - भारत में राजनीतिक अध्ययन से संबंधित शोधपत्र और लेख।

****